

" ऐ ईमान लेनेवालो! जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चहरों को और हाथों को कुहनियों तक धो लिया करो और अपने सिरों पर हाथ फेर लो और अपने पैरों को भी टखनों तक धो लो। और यदि नापाक हो तो अच्छी तरह पाक हो जाओ। परन्तु यदि बीमार हो या सफ़र में हो या तुममें से कोई शौच करके आया हो या तुमने स्त्रियों को हाथ लगाया हो, फिर पानी न मिले तो पाक मिट्टी से काम लो। उसपर हाथ मारकर अपने मुँह और हाथों पर फेर लो। अल्लाह तुम्हें किसी तंगी में नहीं डालना चाहता। अपितु वह चाहता है कि तुम्हें पवित्र करे और अपनी नेमत तुमपर पूरी कर दे, ताकि तुम शुक्र गुज़ार रहो" (सुरा: अल मा'येदा आयत न० 6)

वज़ू और तय्मुम कैसे करें ?

हर वाजिब नमाज़ बल्कि हर ईबादत को बजा लाने से पहले मोमिन को ज़रूरी है की वो खुद को पाक करे और आम तौर पर यह अमल पानी के साथ अंजाम दिया जाता है, चूँकि इस अमल को अंजाम देने का तरीका भी शरी'अत में ब्यान है इसलिए फ़िक्रही ज़बान में इसे वुजू कहा जाता है! अगर पानी मौजूद न हो तो फिर यह काम पाक मिट्टी या इस जैसी दूसरी चीज़ों के ज़रिया यह अमल अंजाम पाता है जिसे तय्मुम कहा जाता है

www.IslamInHindi.Org

तय्मुम कब किया जाए ?

वुजू व गुस्ल के बदले तय्मुम किया जाएगा जब :

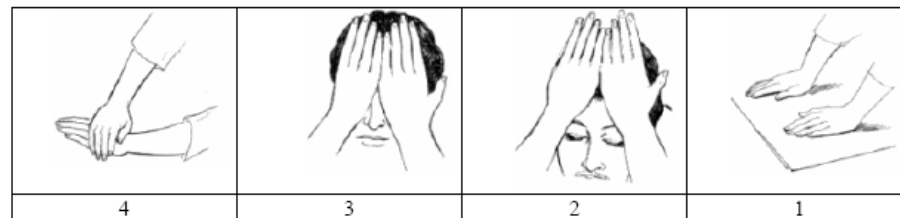
1. वुजू व गुस्ल अंजाम देने के लिये ज़रूरी मिक़दार (मात्रा) में पानी न हो
2. मौजूद पानी की मिक़दार (मात्रा) इतनी कम हो जो इंसानी जान बचाने के लिये ही काफ़ी है और इसे अगर वुजू या गुस्ल के लिये इस्तेमाल किया जाए तो इससे इंसानी जिन्दगी को खतरा हो सकता है
3. मौजूद पानी की मिक़दार (मात्रा) से सिर्फ़ नजिस बदन या लिबास को ही पाक किया जा सकता हो
4. पानी का इस्तेमाल मना हो
5. नमाज़ का वक़्त इतना तंग हो की अगर वुजू या गुस्ल किया जाए तो नमाज़ का वक़्त खत्म हो जाएगा
6. पानी मौजूद है लेकिन इस्तेमाल की इजाज़त नहीं है

तय्मुम कैसे किया जाए ?

नियत : तय्मुम करता/करती हूँ बदले वुजू /गुस्ल के वाजिब क़ुरबतन इलल'लाह

1. अपने हाथों को पाक व खुशक, खालिस मिट्टी, पत्थर या हर वो जिस जिस पर तय्मुम दुरुस्त हो रखे
2. दोनों हथेलियों को पूरी पेशानी पर सर के बाल उगने की जगह से चेहरे और नाक के ऊपर के हिस्से की तरफ़ फेरें
3. बाएं हाथ को दायें हाथ की पुश्त पर कलाई से उँगलियों की तरफ़ मसाह करते हुए ले जाएँ
4. दायें हाथ को बाएं हाथ की पुश्त पर कलाई से उँगलियों की तरफ़ मसाह करते हुए ले जाएँ

नोट : मसाह में भी बताई हुई तरतीब (क्रम) का खयाल रखना ज़रूरी है!



अधिक जानकारी के लिये यहाँ आयेँ

<http://al-islam.org/ritualandspiritual/>

<http://hindi.duas.org>

3. अगर कोई अंगूठी पहन रखी हो तो इसे उतार लें या हाथ धोने के दौरान हरकत दें ताकि पानी इसके नीचे तक पहुँच जाए



4. सर का मसाह : फिर सर के एक चौथाई हिस्से पर सामने की तरफ हाथ की उँगलियों से मसाह करे और कम से कम हाथ के एक उँगली की लम्बाई जितने हिस्से पर जरूर मसाह किया जाए! इस बात का खयाल रहे की हाथ की तरी पेशानी की तरी से मिलने न पाए और सिर्फ हाथ हरकत करे जबकि सर न हिले



5. पांव का मसाह : हाथों पर मौजूद तरी से पांव की उँगलियों से लेकर उभरी हुई जगह तक दायें हाथ से दायें पांव और बायें हाथ से बायें पांव का मसाह करें! मसाह करते वक़्त यह खयाल रहे की हाथ हरकत करे और पांव हरकत न करें।

हाथ को सिर्फ पांव पर रखना ही काफी नहीं बल्कि थोड़ी सी हरकत नीचे से ऊपर की तरफ दें और इस बात का खयाल भी रहे की जिल्द (तवचा) पर कोई चीज़ रिकावत न बने और न ही कोई मोज़ा वगैरा पहना हो!

सर और पाव का मसाह करते वक़्त यह खयाल रखें:

1. सर और पांव का मसाह करते वक़्त हाथ हरकत करें, सर या पांव हरकत न करें
2. सर और पांव को सूखा होना चाहिए, अगर इनपर नमी हो तो यह खयाल रहे की मसाह की तरी इस नमी पर भारी पड़ जाए
3. सर और पांव का मसाह करने के लिये नया पानी नहीं लिया जा सकता बल्कि हाथों पर मौजूद तरी से ही मसाह किया जाएगा, अगर महसूस हो की हाथों पर मौजूद तरी कम है तो दूसरे अंग की वुजू की तरी को लिया जा सकता है!

वुजू कब किया जाता है?

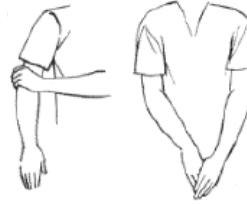
वुजू एक मुस्तहब अमल है, लेकिन जब एक मुकल्लिफ़ को अपनी वाजिब नमाज़ अदा करना हो तो इस पर वाजिब है की पहले वुजू करे! कुछ दुसरे कार्य भी हैं जिसकी वजह से वुजू करना वाजिब हो जाता है! जैसा की कुरान मजीद के लफ़्ज़ों को छूना, खाना-ए-काबा का वाजिब तवाफ़ करना, नज़र करना, अहद करना, कसम खाना की वुजू करेगा/करेगी तो भी वुजू वाजिब हो जाता है!

वुजू कैसे करें?



1. नियत : सबसे पहले नियत करे की वुजू बजा लाता/ लाती हूँ कुर्बतन इलल-लाह
2. चेहरे का धोना: अगर चेहरे और हाथों पर क्रीम, तेल, या कोई और चीज़ लगी है जो पानी को जिल्द तक पहुँचने से रोकती है तो इसे पहले साफ़ करे! सबसे पहले दायें हाथ में आबे मुतलक (खालिस/साफ़ पानी)

लेकर पेशानी के ऊपर वाले हिस्से पर डालें, चेहरे को धोने की वाजिब मीकदार (मात्रा) लम्बाई में पेशानी से ठोड़ी तक और चौड़ाई में हाथ की बीच वाली उँगली और अंगूठे के बीच जितना हिस्सा आ जाए



3. हाथों को धोना : बायें हाथ में पानी लेकर दायें हाथ की कुहनी से ज़रा ऊपर पानी डाले और हाथ को ऊपर से नीचे की तरफ़ हरकत दे की पानी पुरे बाजू पर फैल जाए! हाथों की हरकत (ज्यादा) से वुजू बातिल हो जाता है! जब हाथ ऊपर से नीचे की तरफ़ आ रहा हो तो इसे उँगलियों के सरों तक लेकर जाना चाहिए, फिर इसी तरह दायें हाथ में पानी लेकर बायें हाथ की कुहनी पर डालें और ऊपर से नीचे की तरफ़ हरकत दें ताकि सारा हाथ धुल जाए!

हाथों और चेहरे को धोते वक़्त यह खयाल रखा जाए :

1. हाथ ऊपर से नीचे की तरफ़ हरकत करें, नीचे से ऊपर की तरफ़ हरकत से वुजू बातिल हो जाता है!
2. वाजिब मीकदार (मात्रा) से कुछ ज़्यादा धो लेने से वाजिब हिस्सा के धुल जाने का यक़ीन हो जाता है!